दिनांक 30 जुलाई, 1984

सं. श्री.वि./एफ.डी./74-84/27006.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मैं ग्रहण फरनीचर हाऊस, 2-ए/2 ब्गला प्लाट, एन.शाई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री पूरत दास तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपान विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीक्ष्मचना सं 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीविस्चना सं 11495-जी. श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीवित्यम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीज या तो जिवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री पूरत दास की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा श्रीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./75-84/27013.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० करीकाबाद पावर लून मोनरज एसोसियेशन लि०, ज्लाट नं० 10-11, नैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री टेल चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूनि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ओशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की आरा 10 की उनआरा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शिक्तियों का अयोग करते हुये, हित्याणा के राज्यपान इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-63/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साब पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मीमेला है या उन्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामेला है या उन्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामेला है :—

😝 क्या श्री टेक चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत की हकदार है?

सं. भी. वि./एफ.डी./77-84/27020.—चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ हेमला इन्ब्राईडरी मिल्ज प्रा०लि॰, मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री परमाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिशिस्चना •सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिश्चचना सं. 11495 जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1959 द्वारा उक्त ग्रिशिनियम की घारा 7 के ग्रिशीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मानला न्यायिनण्य हेतु निद्धित करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है था उक्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित सामला है:—

क्या श्री परमाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?

एस. के. महेश्वरी,

संयुक्त सचिव, हरियाणा शरकार, श्रम विभाग।